संघर्ष और लगन से आसमां छूने वाली महिलाएं सम्मानित

महिला दिवस के मौके पर नवभारत की ओर से अलग अलग क्षेत्रों में लोहा मनवाने वाली महिलाओं का सम्मान किया गया. इस अवसर पर मंचासीन नवभारत समाचार पत्र की मार्गदर्शक श्रीमती बृज माहेश्वरी, पूर्व महापौर विभा पटेल, सुरुचि पत्रिका की संपादक पूजा माहेश्वरी, समाजसेवी शुभांगी सिंह और प्रबंध संपादक सुमीत माहेश्वरी.

इस बार अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस शहर की उन महिलाओं के लिए बेहद खास रहा, जिन्होंने लगातार संघर्ष, सकारात्मक सोच, चुनौतियों से पार पाते हुए समाज के विभिन्न क्षेत्रों में न सिर्फ विशेष स्थान बनाया, बल्कि ये अन्य महिलाओं के लिए भी एक प्रेरणा बनकर सामने आयी हैं. नवभारत परिसर में संपन्न हुए सुरुचि नारी शक्ति सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश महिला कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व महापौर श्रीमती विभा पटेल, विशिष्ट अतिथि श्रीमती शुभांगी सिंह और मेजबान के रूप में सुरुचि की संपादक श्रीमती पूजा माहेश्वरी विशेष रूप से उपस्थित रहीं. आयोजन में शहर की 15 प्रमुख महिलाओं को सुरुचि नारी सम्मान से सम्मानित करते हुए नवभारत परिवार गौरवान्वित महसूस कर रहा है. साथ ही महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और संपूर्ण विकास की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता दोहराता है. कार्यक्रम की प्रमुख झलकियां छायाचित्रों और शब्दों के माध्यम से यहां पेश करने का प्रयास किया है.

महिलाएं क्षमताओं के प्रदर्शन के जरिए साबित करती हैं स्वयं को

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विभा पटेल ने महिला दिवस पर सभी को शुभकामनाएं प्रेषित की और कहा कि हम सभी खुशनसीब हैं कि अन्य देशों में महिलाओं को अधिकार काफी लंबे संघर्ष के बाद मिले थे, वो हम सबको आजादी के साथ अपने आप ही मिल गए. महिलाओं को वोट देने का अधिकार आजादी के साथ ही मिला. शायद लोगों को लगता होगा कि इसमें कौन सी बड़ी बात है. उन्होंने कहा कि अमरीका जैसे देश में भी एक सौ साल के संघर्ष के बाद वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ और आज हम सभी अपने अपने क्षेत्रों में स्थान बना रहे हैं. लेकिन आज मैं किसी राजनैतिक कारण से नहीं, बल्कि जिन्होंने अवसर दिया, उस कारण से तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी को याद करना चाहती हूं. उन्होंने नगरीय निकाय चुनावों में महिलाओं को आरक्षण दिया. जब लोग उनसे कहा करते थे कि चुनाव लड़ने के लिए इतनी सारी महिलाएं कहां से लाएंगे. लेकिन महिलाएं आयीं, चुनाव लड़ी और अपना स्थान बनाया. विभा पटेल ने कहा कि उन्हें याद है. उस समय उनके साथ स्कूल में कक्षा नवीं में गणित विषय चुनने वाली मात्र एक लड़की थी. बाकी सब लड़के थे. और वही लड़की आगे चलकर इंजीनियरिंग में सिलेक्ट हुई. उस समय जब सीबीएससी का परिणाम आया, तो दूसरे स्थान पर पुरुष लेकिन तीसरे और चौथे स्थान पर लड़कियां थीं. ये यह दिखाता है कि लड़कियां कितनी मेहनत कर रही थीं. लड़कियों को अवसर की आवश्यकता रहती है और निश्चित तौर पर अवसर पुरुषों ने भी दिए. यह भी सच है कि जब भी महिलाओं को अवसर मिले, उन्हें अपनी योग्यता साबित करके दिखाई है. मैं इस कार्यक्रम में सम्मानित हुईं सभी बहनों को शुभकामनाएं देती हूं. इन महिलाओं ने अपने संघर्ष के जरिए स्थान बनाया है. हमारे समय में, यानी लगभग 40-50 साल पहले, हम यह नहीं सोच सकते थे कि कोई लड़की एवरेस्ट पर चढ़ेगी, कोई मीडिया में काम करेगी. कोई स्वीमिंग कांप्टीशन में पदक हासिल करेगी. लेकिन आज महिलाओं ने इन क्षेत्रों में भी अपना स्थान बनाया है. श्रीमती पटेल ने कहा कि मैं जब महापौर बनी थी, तब पत्रकारों ने मेरे से सबसे पहला सवाल पूछा था कि नगर निगम कौन चलाएगा, आपके पति, परिजन या मंत्री. तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ था और मैंने कहा था कि तीनों में से कोई नहीं, मैं ही चलाऊंगी. तो ये इस बात का प्रतीक है कि जब महिलाएं आगे आती हैं, तो अपेक्षा यही होती है कि उसके पीछे कोई पुरुष काम कर रहा होगा. लेकिन महिलाएं अपनी क्षमता प्रदर्शित करती हैं और अपनी योग्यता साबित करती हैं.

महिलाओं का घर से बाहर निकलकर मुकाम बनाना बड़ी उपलब्धि

समाजसेवी एवं मोटिवेशनल स्पीकर शुभांगी सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि पुरुष का घर से निकलना सामान्य बात हैं, क्योंकि वे सदियों से ऐसा ही करते आ रहे हैं, लेकिन कोई स्त्री घर से बाहर निकलकर किसी क्षेत्र विशेष में विशिष्ट स्थान बनाए, तो वह अपने आप में बड़ी उपलब्धि है. घर के बाहर निकलने के साथ ही चुनौतियों से जूझना पड़ता है. महिलाओं को दोहरी जिम्मेदारी निभाना होती है. पेशेवर जिम्मेदारियों के साथ घर की देखभाल भी उन्हीं की जिम्मेदारी रहती है. उन्होंने अपनी मां का उदाहरण देते हुए कहा कि वे गाना बहुत बेहतर गाती थीं, लेकिन जब मेरा जन्म हुआ और संतान की परवरिश का समय आया, उन्होंने यह कार्य छोड़ दिया. इसके पीछे उनकी मां का तर्क था कि बच्चों को कौन देखेगा? शुभांगी सिंह ने कहा कि लेकिन यह सकारात्मक पहलू है कि अब काफी सारे घरों में यह बात सुनाई नहीं देती कि बच्चों को कौन देखेगा. अब घर के पुरुष भी काफी सहयोग करते हैं. पुरुष भावनात्मक रूप से भी सहयोग करने में पीछे नहीं रहते हैं. इस वजह से महिलाओं की राह काफी आसान हो जाती है. उन्होंने यह भी कहा कि जब वे गांवों में जाती हैं और वहां पर जिस संख्या में महिलाएं आती हैं, उनकी भीड़ की देखकर लगता है कि समाज बदल रहा है. भले ही धीरे धीरे हो रहा है. अभी मैं यह नहीं कहूंगी कि हम बहुत आगे बढ़ चुके हैं. हमें किसी चीज की जरूरत नहीं है और महिलाएं सबसे सशक्त हो गई हैं. अभी ऐसा नहीं है. अब भी बहुत काम करने की जरूरत है. लेकिन यह भी सच है कि बदलाव आ रहा है और अच्छा बदलाव आ रहा है. उन्होंने कहा कि अब महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए हर तरह के अवसर मौजूद हैं. पहले की तरह पाबंदियां नहीं हैं. शिक्षा के अवसर लगातार बढ़ रहे हैं. परिजनों, समाज का नजरिया और रवैया भी महिलाओं के प्रति बदल रहा है. इन सब स्थितियों का लाभ लेते हुए महिलाओं को अपने लक्ष्य तय करते हुए उन्हें हासिल करने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहिए.

महिलाओं में आत्मनिर्भरता और निर्भीकता की अलख जगा रही सुरुचि

सुरुचि की संपादक पूजा माहेश्वरी ने कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एवं पूर्व महापौर विभा पटेल, विशिष्ट अतिथि शुभांगी सिंह और सभी मेहमानों का स्वागत करते हुए समारोह की गरिमा बढ़ाने के लिए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया. उन्होंने कहा कि नवभारत और सुरुचि परिवार की ओर से अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की सभी को शुभकामनाएं. हर्ष हो रहा है कि नवभारत ने सफलतापूर्वक 92 वर्ष और सुरुचि ने महिलाओं को सशक्त बनाने के 40 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं. महिला दिवस संकल्प का दिन है. हम सब प्रण लें कि हर बेटी को शिक्षा के लिए प्रेरित करेंगे. हर महिला को हुनर के लिए आत्मनिर्भर बनाएंगे और समानता पर आधारित समाज निर्माण में योगदान देंगे. आज की नारी घर और कार्यक्षेत्र में दोहरी भूमिका कुशलता से निभा रही है. सुशिक्षित होकर हर क्षेत्र में परचम लहरा रही है. समाज में जागरुकता और सकारात्मक सोच का संदेश दे रही है. हमारी सुरुचि को हमने आलेख का खजाना बनाने की कोशिश की है. व्यायाम, खानपान और योग से कैसे महिलाएं स्वस्थ व ऊर्जावान रहें, फैशन, स्टाइल, ब्यूटी और स्किनकेयर अपनाकर महिलाएं कैसे आकर्षक हो सकती हैं. पेरेंटिंग और गार्डनिंग तथा संस्कारों की भी जानकारी देते हुए हम सबको सजग बनाते हैं. सुरुचि घर घर जाकर महिलाओं में आत्मनिर्भरता, निर्भीकता और आत्मविश्वास की अलख जगा रही है.

श्रीमती माहेश्वरी ने नारी शक्ति पर इन पंक्तियों के साथ अपने संबोधन को विराम दिया.....

नारी तुम प्रेम की डोर हो, हर मजबूत स्तंभ की नींव हो.
हर उम्मीद की आस हो, बिखरे मोती की बहुत सुंदर माला हो,
तुम सुदृढ़ हो,अभिमान हो, तुम शक्ति हो, प्रेरणा की मिसाल हो.
विदआउट हर- हीरो भी जीरो हैं.

उन्होंने अंत में उन सभी के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होंने कार्यक्रम में पधारकर नारी शक्ति का मान बढ़ाया.

अपार क्षमताओं से परिपूर्ण होती हैं महिलाएं

प्रमिला झंवर ने बताया कि मुझे इस परिवार से बहुत लगाव रहा है. मैं अपने परिवार में नवभारत परिवार की बातें सुना करती थी. मुझे अवॉर्ड बहुत सारे मिले हैं, लेनि यह अवार्ड मेरे लिए विशेष हैं. इसके लिए मैं सभी का धन्यवाद देना चाहती हूं. उन्होंने बताया कि मेरी शादी को 40 साल हो गए हैं, 25 साल पहले मैंने जब यह टपरवेयर का कार्य स्टार्ट किया था। इसे शुरू करने से पहले मैंने सोचा था कि एक महिला में बहुत सारी क्षमताएं होती हैं। इसी सोच के आधार पर इस कार्य को शुरू किया गया. एक बात समझ में आई कि आप में बहुत सारी क्षमताएं बहुत हैं, आप बहुत सारी महिलाओं को आत्मनिर्भर बना सकती हो। पैसा कमाना सिखा सकते हो, उनसे उनकी पहचान करवा सकते हो। एक औरत कोई नहीं जानता वह खुद को ही नहीं पहचानती है, मेरा पेशन यह था मेरी सोच थी कि प्रदेश में महिला को ढूंढना. प्रदेश में दूर हर गांवों में हर शहर में कोई हर उस औरत को ढूंढना जो कुछ करना चाहती है, कुछ बनना चाहती है, अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है, धन्यवाद नवभारत समूह को, जिन्होंने मुझे यहां बुलाया, सम्मानित किया. मैं हमेशा आपकी आभारी रहूंगी.

माउंट एवरेस्ट से स्कूबा डाइविंग तक सजाया तिरंगा

मेघा परमार ने कहा कि मुझे मेरे परिवार ने पूरी दुनिया को देखने का अवसर दिया, मेरे पापा ने कहा था कि छोरी के पैदा होने से नहीं डरें, छोरी के पलने से डरें, क्यों कि समाज खराब है, मैं कहती हूं प्रकृति खराब है, मैं मध्यप्रदेश से अकेली लड़की हूं जो पहाड़ों पर चढ़कर आई, आप सब लोगों की दुआएं साथ थी, हम कहते हैं कि गांवों में दो तरह के सरपंच हैं- एक महिला और दूसरी महिला सरपंच का पति, उन्होंने एक उदाहरण देते हुए बताया कि उनसे हैंड पंप लगाने का पूछा जाता है तो महिला सरपंच पति कहता है जहां पुरुष पानी भरते हैं, वहां लगाओ, वहां महिला सरपंच कहती जहां पुरुष नहीं जहां महिला पानी भर सकें वहां लगाओ, लोग तुम्हारी खूबसूरती को पसंद करेंगे लेकिन खूबसूरती तुम्हारे अंदर है. महिला दिवस पर नवभारत द्वारा सम्मानित होना मेरे लिए बिल्कुल ऐसा है जैसे समाज की हर महिला के संघर्ष को उसके सामाजिक और मानवीय कार्यों को सराहा जा रहा है। क्योंकि यह सम्मान उन सभी बेटियों का है जो सीमित संसाधनों में भी बड़े सपने देखने का साहस रखती हैं। महिलाओं के लिए कहना चाहूंगी कि मेरा एवरेस्ट बर्फ वाला था, आप अपना एवरेस्ट ढूंढिए और उसे निरन्तर प्रयास से सफल बनाइए। महिलाओं को सबसे पहले शिक्षित और उसके बाद आर्थिक आत्मनिर्भरता को अपनाकर स्वयं निर्णय लेने में सक्षम होना होगा.

बेटों को समझाएं- वे स्त्रियों का करें सम्मान

अनुष्का तिवारी ने कहा कि क्या कहूं मैं बहुत ज्यादा भावुक हूं यहां आकर और एक कंटेंट क्रिएटर के रूप में देखें तो बहुत ज्यादा खुश हूं कि हमे भी पहचाना जा रहा है. मध्यप्रदेश में और मैं बहुत खास बात बोलना चाहूंगी इस मंच के द्वारा कि 1947 की देश की आजादी के लिए लड़ाई खत्म हो गई हो पर महिलाओं की आजादी की लड़ाई आज भी चल रही है. कहीं न कहीं महिलाएं आज बदली हुई हैं, कहीं न कहीं उस पर समय की पाबंदी है, वह क्या कर रही है, वह कहां जा रही है, वह किससे मिल रही है, वह कहां काम करती है और क्या करती, उसकी हर चीज पर पाबंदी है. स्कूल में जाओ तो ब्लो स्कर्ट नहीं होना चाहिए, नहीं तो आपके क्लास में डिस्कर्ट हो जाएंगे. मैंने कई बार यह बातें सुनी हैं. फिर रात को कॉलेज में जाते हैं तो देखो बेटा ज्यादा डीप कपड़े मत पहनना, किसी पार्टी में मत जाना क्योंकि वहां पर अनसेफ हो सकता है. क्यों कहीं न कहीं सीधे सी बात है वहां पर काम करने गए, तो बोला जाता है कि 9 बजे के बाद घर आ जाना, पार्टी में मत जाना, कहीं बाहर नहीं निकलना. तो यह सीख सिर्फ लड़कियों को ही क्यों दी जाती है, वह अपने बेटों को भी समझाएं कि वह भी किसी की बेटी है, वह भी किसी की बहन है, हो सकता है तुम्हारी ही बहन हो, कहीं न कहीं तुम्हारी मां भी हो सकती है. उस हिसाब से सोचो, उसका सम्मान करो.

महिला दिवस एक दिन मनाने का विषय नहीं

प्रदेश भाजपा प्रवक्ता नेहा बग्गा ने इस गरिमामय आयोजन में शोभा बढ़ायी. उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस एक दिन मनाने का विषय नहीं है. आज महिलाएं पंच से लेकर राष्ट्रपति पद पर भी विराजमान हैं. स्त्रियां अब डॉक्टर और इंजीनियर के पेशे में नहीं, बल्कि अंतरिक्ष में भी अपना लोहा मनवा रही हैं. सुश्री बग्गा ने कहा कि हमें बिल्कुल नहीं भूलना चाहिए कि हम सब की मां प्रथम गुरू होती है. मातृ शक्ति ने हमें यहां तक लाने का काम किया है. प्रकृति ने भी अपने विभिन्न स्वरूपों में मातृ शक्ति को ही प्राथमिकता दी है. लेकिन अब हमें रूढ़िवादी मानसिकता को तोड़ना है. बेटी के पैदा होने पर अनेक तरह के सवाल भी उठाए जाने लगते हैं. धीरे धीरे इस मानसिकता को तोड़ने का कार्य भी हो रहा है. साबित किया जा रहा है कि नारी बलवान भी है और बुद्धि से परिपूर्ण भी है. इसलिए महिला दिवस प्रतिदिन सेलीब्रेट करना चाहिए. क्योंकि महिलाएं 24×7 कार्य करती हैं. महिलाओं की क्षमताएं असीम हैं. सुश्री बग्गा ने अपने संबोधन का समापन इन शब्दों के साथ किया....

दुनिया अगर गुलशन है, तो नारी उसकी माली है
झुक जाए तो मां सीता है और अड़ जाए तो चंडी काली है.